पित्ताशय नलिका कर्करोग संबंधी जनजागृती माह

पित्ताशय नलिका कर्करोग का अर्थ - कोलॅन्जिीओकार्सिनोमा अथवा पित्ताशय नलिका का कर्करोग यह यकृत का प्राथमिक कर्करोग माना जाता है । यह मुख्य रुपसे यकृत के इर्दगिर्द होता है । छोटी पित्तशय नलिका के (hilum) यकृत के मध्य हिस्से से बडी पित्ताशय नलिका मे अथवा मुख्य एवं संयुक्त पित्त नलिका जो यकृत से पित्त बाहर निकालते है , उस पृष्ठ भाग मे भी हो सकता है ।

कारण एवं खतरा-

कोलॅन्जिीओकार्सिनोमा (पित्ताशय का कर्करोग) होने के कारण पित्ताशय नलिका का कर्करोग होने के प्रमुख अबतक पता नही चल सके है । उसके अनेक कारणों का एकत्रिक परिणाम यानि कर्क रोग है, जैसे यकृत अथवा नलिका को पुराना रोग हो, कुछ जहरिले द्रव्य अथवा कुछ प्रमाण मे अनुवंशिक पुर्वस्थिती के कारण भी हो सकता है।

यकृत के कर्करोग के कारण यकृत का कार्य मे रुकावट आती है, एवं रक्त से नुकसान देह पदार्थ बाहर निकालने मे तकलिफ होती है ।यकृत मे कर्करोग के दो मुख्य प्रकार है ।

1.हिपॅटीसेल्यूलर कार्सीनोमा

2. कोलॅन्जीओ कार्सीनोमा

किस कारण बढता है खतरा-

- सिऱ्होसीस (यकृत रोग) मद्यपान अथवा हिमॅटोक्रोमॅटीसीस
- हिपॅटीसीस बी अथवा सी का संसंर्ग
- धुम्रपान अथवा मद्यपान
- जहरीले द्रव्योंसे संपर्क
- यकृत अथवा पित्ताशय नलिका मे पथरी के कारण दिर्घकालीन खोज
- चिकित्सीय परिस्थिती जैसे यकृतपर चढी चरबी अथवा ठोसरुप
- यकृत कर्करोग का पुर्वइतिहास

सर्वसाधारण रुप से देखा जाए तो कोलॅन्जीओ कार्सीनोमा यह रोग उम्र के 60 वर्ष मे होता है किंतु वर्तमान मे तरुण युवा पिढी मे भी यह रोग पाया जा रहा है । वर्तमान मे इस रोग के वैज्ञानिक कारण बताते है ।

- प्रायमार स्लेरॉसिंग कोलॅन्जायटीस (PSC)
- लिव्हर फ्लूक
- बाईल डक्ट स्टोन्स
- कोलेडोकल सिस्ट

लक्षण-

कोलॅन्जीओ कार्सीनोमा के लक्षण पुर्णतः सामान्य है, जैसे जी मचलना भूख न लगना, रोग न बढने की स्थिती स्पष्ट न दिखाई देना

लक्षणोंमे प्रमुखतः

- पिलीया रोग
- ठीक नही लगना

- पेट खराब होना
- भूख मे कमी
- वजन कम होना
- थकावट लगना

उपचार पध्दती-

कोलॅन्जीओ कार्सीनोमा उपचार उसी स्थान पर एवं आकार का पित्ताशय नलिका के सामने फैला है क्या?

तथापि सर्वसाधारण स्थिती

शल्यक्रिया-

1. **बायलरी बायपास यानि कया?**

   बायलरी बायपास यानी पित्ताशय नलिका की रुकावटे दूर कर उस ओर शल्यक्रिया ऐसी रुकावटे जिससे पित्ताशय मे अथवा यकृत मे संग्रहित रहता है, जिससे दर्द, खुजली, पिलीया, यकृत कार्य रुकना जैसे परिणाम होते है । शल्यक्रिया के माध्यम से पित्त पित्तशय मे या छोटी आंत मे ले जाया जा सकता है, जिससे रुकावटे के कारण संग्रहित पित्त से होनेवाले दुष्परिणाम से बचाव है अन्य किसी भी शल्यक्रिया से ऐसी रुकावटे दूर करना संभव न हो तो ही बायलरी बायपास शल्यक्रिया की जाती है ।

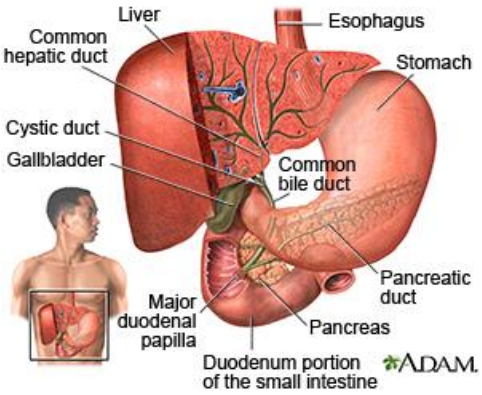

2. केमोथेरपी
3. रेडिओथेरपी (SIRT/SBRT/cyberknife)

कोलॅन्जीओ कार्सीनोमा का निदान कैसे करें?

- अल्ट्रासाउंड स्कॅन
- सी.टी स्कॅन (कॉम्प्युटराइज टोमोग्राफी)
- एमआरआय (मॅग्नेटीम रेझोनन्स इमेजिंग)
- ईआरसीपी (एडोंस्कोपीक रिट्रोग्रेड)

कोलॅन्जीओ पॉन्क्रीॲटोग्राफी

- ईयुएस (एन्डोस्कोपीक अल्ट्रसाउंड स्कॅन)
- पीटीसी (परक्युॲनस ट्रान्सेप्टीक कोलॅन्जीओग्राफी)
- पीईटी (पॉझीट्रॉन एमिशन टोमोग्राफी)
- अन्जीओग्राम
- बायोप्सी
- लॅप्रोस्कोपी

संदर्भ : मायक्रोमेडेक्स सोल्यूशन्स